107 लोगों को दो दिनों में बचा चुके हैं वायुसेना के जवान केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख से। इनमें नौ विदेशी भी शामिल हैं। ये सभी लोग ट्रैकिंग के लिए गए थे, लेकिन भारी बर्फबारी में फंस गए थे।

गुजरात और महाराष्ट्र को भी मिला तेजस का तोहफा

- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को भी जोड़ा जाएगा रेल सुविधा से
- गुरुवार को छोड़कर सप्ताह में छह दिन चलेगी यह ट्रेन

शत्रुघ्न शर्मा, अहमदाबाद

गुजरात और महाराष्ट्र को देश की दूसरी सेमी हाईस्पीड ट्रेन तेजस का तोहफा मिला है। अहमदाबाद से मुंबई के बीच चलने वाली इस ट्रेन को मुख्यमंत्री रुपाणी ने हरी झंडी दिखाई। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को भी रेल सुविधा से जोड़ा जाएगा। यात्रियों के लिए इसका कमर्शियल संचालन 19 जनवरी से शुरू होगा। यह ट्रेन 500 किमी की दूरी साढ़े छह घंटे में तय करेगी।

रेलवे की सहायक कंपनी आइआरसीटीसी के संचालन वाली यह दूसरी तेजस (82902/ 82901) ट्रेन है। इससे पहले पिछले साल दिल्ली-लखनऊ तेजस एक्सप्रेस शुरू हुई थी। गांधीनगर में मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने रेलमंत्री पीयूष गोयल के साथ एक खास बैठक कर गुजरात में चल रही रेलवे की विविध योजनाओं पर चर्चा की। इसमें तेजस के रूट को केवडिया में बनी दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तक रेलवे ट्रैक बिछाने की योजना शामिल है। रुपाणी ने जहां अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर तेजस ट्रेन को हरी झंडी दिखाई, वहीं गोयल ने केवडिया पहुंचकर वडोदरा से केवडिया के बीच रेल ट्रैक व केवडिया में ग्रीन स्टेशन की योजना का जायजा लिया।

अहमदाबाद में शुक्रवार को अहमदाबाद-मुंबई तेजस एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाए जाने के मौके पर पारंपरिक गुजराती पहनावे में ट्रेन हॉस्टेस ने अतिथियों और यात्रियों का स्वागत किया। एएनआइ

केवडिया में बनेगा ग्रीन स्टेशन : केवडिया में एशिया का पहला ग्रीन रेलवे स्टेशन बनेगा। देश विदेश के पर्यटकों को स्टेच्यू ऑफ यूनिटी आने के लिए रेल सुविधा प्रदान करने के लिए इसे वडोदरा से जोड़ा जाएगा। इस ट्रैक के लिए जमीन का काम एक साल में पूरा कर लिया जाएगा। गुजरात में रेलवे लाइन के गेज परिवर्तन व डबलिंग ऑफ रेलवे लाइन, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण तथा यहां बन रहे फाइव स्टार होटल व गुजरात में 2161 किमी नई रेल लाइन पर भी रुपाणी ने गोयल से चर्चा की।

बैठ सकेंगे 736 यात्री : तेजस ट्रेन अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं से युक्त होगी। इसमें दो एक्जीक्यूटिव क्लास चेयरकार होंगी जिनमें प्रत्येक में 56 सीटें होंगी। आठ चेयरकार होंगी और हरेक में 78 सीटें होंगी। पूर्णरूपेण एयरकंडीशन ट्रेन की कुल यात्री क्षमता 736 होगी। टिकटों की बुकिंग केवल ऑनलाइन 60 दिन पहले करनी होगी। खाना, चाय, कॉफी ट्रेन में दी जाएगी। ट्रेन की खूबसूरत साजसज्जा के अलावा, हर व्यक्ति के लिए पढ़ने के लिए विशेष लाइट, मोबाइल चार्जिंग प्लाइंट, सीसीटीवी कैमरे, बायो टॉयलेट, एलईडी टीवी सेट और आटोमैटिक दरवाजे होंगे।

यह ट्रेन गुरुवार को छोड़कर सप्ताह में छह दिन चलेगी। अहमदाबाद से सुबह 6.40 मिनट पर रवाना होकर 1.55 पर मुंबई सेंट्रल पहुंचेगी। वहीं मुंबई से दोपहर 3.40 मिनट पर रवाना होकर रात्रि 9.55 पर अहमदाबाद पहुंचेगी। रेलवे बोर्ड चेयरमैन वीके यादव बताते हैं कि इस ट्रेन की गति क्षमता 160 किमी प्रति घंटे की रहेगी। ट्रेन में प्लेन की तरह हॉस्टेस होंगी जो गुजराती परिधान में नजर आएंगी। तेजस अहमदाबाद से निकलकर गुजरात के नडियाड, वडोदरा, भरुच, सूरत, वापी स्टेशन पर रुकेगी। महाराष्ट्र में बोरीवली में ही स्टॉपेज होगा। मुंबई सेंट्रल आखिरी स्टेशन होगा।

पहले दिन ही देरी से चली

ट्रेन लेट होने पर आइआरसीटीसी यात्रियों को एक घंटे से अधिक की देरी पर सौ रुपये और दो घंटे से अधिक देर पर 250 रुपये हर्जाना देगी। हालांकि देश की दूसरी सबसे हाईस्पीड ट्रेन अपने पहले ही दिन करीब 45 मिनट देरी से चली। दरअसल अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर मुख्यमंत्री रुपाणी व रेलमंत्री पीयूष गोयल हरी झंडी दिखाने वाले थे। मुख्यमंत्री स्टेशन पर गोयल का इंतजार करते रहे बाद में पता चला वे नहीं आ रहे तो रुपाणी ने तेजस को हरी झंडी दिखाई। तेजस सूरत स्टेशन पर करीब 45 मिनट देरी से पहुंची। भाजपा सांसद कीर्ति सोलंकी ने बताया कि खराब मौसम के कारण गोयल नहीं पहुंच पाए। उन्होंने बताया कि मुंबई-अहमदाबाद रूट पर बुलेट ट्रेन का काम भी जारी है।

पहले सफर में उत्साह के बावजूद नजर आईं कुछ अव्यवस्थाएं

- कोच ई-1 में ट्यूबलाइट पैनल गिरा, कई एलईडी टीवी स्क्रीन खराब थे
- तकनीकी खामी के कारण पूरे सफर में नहीं चला वाईफाई

मिड डे, मुंबई

प्रतिष्ठित अहमदाबाद-मुंबई तेजस एक्सप्रेस के पहले सफर में उत्साह के बावजूद अव्यवस्थाएं नजर आईं। यार्ड में डेढ़ साल से खड़े पुराने कोचों के इस्तेमाल के चलते भी कुछ यात्रियों को ट्रेन में परेशानियों का सामना करना पड़ा।

अहमदाबाद से मुंबई के सफर के दौरान कोच ई-1 में एक वरिष्ठ नागरिक पर ट्यूबलाइट का पैनल गिर गया। इसी तरह वडोदरा स्टेशन पर ट्रेन के चलते ही दरवाजे बंद होने पर कुछ कुली भी ट्रेन में रह गए। वहीं, एक अन्य यात्री ने बताया कि यात्रा तो आनंददायी थी, लेकिन कुछ छोटी-छोटी खामियां भी नजर आईं। महंगी एक्जीक्यूटिव कोच में कई टीवी स्क्रीन खराब दिखे। इन दो कोचों में टेबल के पीछे की टाइल पर भी ध्यान देने की जरूरत है। पूरी यात्रा के दौरान कुछ तकनीकी खामी के कारण इंटरनेट का वाई-फाई भी काम नहीं कर रहा था।

आइआरसीटीसी की निदेशक (पर्यटन और मार्केटिंग) रजनी हसीजा ने बताया कि उन्हें सभी शिकायतों की जानकारी मिल चुकी है। इन सभी शिकायतों को दूर किया जाएगा। ट्रेन डेढ़ साल से खड़ी थी। उसे तैयार किया गया है, लेकिन कुछ चूक हो सकती है। संबंधित विभागों को इन खामियों को वापसी की यात्रा शुरू होने से पहले दूर करने के लिए कहा गया है। मिड डे के अनुसार इन कोचों का निर्माण अगस्त, 2018 में किया गया था।

एमएनएस कार्यकर्ताओं के विरोध के चलते वापसी में ट्रेन की होस्टेस की पोशाक में भी मामूली फेर-बदल किया जाएगा। दरअसल यात्रा में उन्होंने गुजराती साड़ी पहनी है। जिस पर आपत्ति के बाद उन्हें मराठी शैली की कैप दी गई है, जो वापसी में वह पहनकर आएंगी। ट्रेड यूनियनों ने मुंबई के रेलवे स्टेशन पर रेलवे के निजीकरण के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी किया।

टेक्नोमेक घोटाले के आरोपित शर्मा के प्रत्यर्पण का प्रयास तेज

कर्ज का है मामला ▶ दुबई में 23 दिसंबर को इंटरपोल ने किया था गिरफ्तार

आरके शर्मा की इंडोनेशिया में भी हैं खनिज खदानें

राज्य ब्यूरो, शिमला

हिमाचल प्रदेश में इंडियन टेक्नोमेक कंपनी से जुड़े छह हजार करोड़ से अधिक के कर-कर्ज घोटाले के मुख्य आरोपित दिल्ली निवासी आरके शर्मा को भारत लाने के प्रयास तेज हो गए हैं। सूत्रों के अनुसार हिमाचल सीआइडी की एसआइटी ने सुबूतों की फाइल गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय को सौंप दी है। उसे 23 दिसंबर को दुबई में इंटरपोल ने गिरफ्तार किया था। दुबई के साथ भारत की प्रत्यर्पण संधि है।

हिमाचल की नाहन की कोर्ट ने आरके शर्मा को उद्घोषित भगौड़ा यानी पीओ घोषित किया था। उसे रेड कार्नर नोटिस भी जारी हुआ था। इसके बाद उसे इंटरपोल ने गिरफ्तार कर लिया था। अभी वह न्यायिक हिरासत में है। सीआइडी सूत्रों के अनुसार आरके शर्मा ने विदेशों में भी कई जगह संपत्ति एकत्र की है। उसकी इंडोनेशिया में खनिज पदार्थों की खदानों का भी पता चला है। हिमाचल प्रदेश से पैसा लेकर विदेशों में निवेश किया। मनी लॉड्रिंग के एंगल से प्रवर्तन निदेशालय अलग से जांच कर रहा है। इडी ने कई संपत्तियों को अटैच भी किया है। सूत्रों के अनुसार ओडिशा की सारी संपत्तियों की चार करोड़ से पांच करोड़ की कीमत की है।

इंडियन टेक्नोमेक कंपनी का मुख्य द्वार। फाइल

पांच आरोपितों की आई अभियोजन मंजूरी : आबकारी एवं कराधान विभाग के पांच आरोपित अधिकारियों, कर्मचारियों की राज्य सरकार से मंजूरी मिल गई है। अब इसके खिलाफ भी कोर्ट में चार्जशीट फाइल होगी। यह तीसरी चार्जशीट होगी। तीसरी में कंपनी के निदेशक रहे अनिल जैन, ऑडिटर राजेंद्र सिंघानिया को भी आरोपित बनाया जाएगा।

कंपनी ने जलाया है रिकॉर्ड : सीआइडी जांच से पर्दाफाश हुआ है कि इंडियन टेक्नोमेक कंपनी ने बहुत सारा रिकॉर्ड जला दिया है। ऐसा इसलिए किया ताकि कंपनी के खिलाफ सुबूत न मिल सकें। इसमें भी आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप है।

क्या है मामला

आबकारी एवं कराधान विभाग की इकोनॉमिक इंटेलीजेंस यूनिट ने 2014 में इंडियन टेक्नोमेक कंपनी की गड़बड़ियों को पकड़ा। तीन साल तक यह मामला हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में चलता रहा। हिमाचल हाई कोर्ट में भी केस चला। सीआइडी ने इस पूरे मामले की गहनता से जांच की। जांच में पाया कि कंपनी ने बड़ा घोटाला किया है। दो चार्जशीट कोर्ट में दाखिल हो चुकी हैं।

सेंगर की सजा रद करने से हाई कोर्ट ने किया इन्कार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : उत्तर प्रदेश के उन्नाव में वर्ष 2017 में नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में दोषी विधायक कुलदीप सेंगर की प्राकृतिक मौत तक उम्रकैद की सजा रद करने से दिल्ली हाई कोर्ट ने इन्कार कर दिया है। न्यायमूर्ति मनमोहन व न्यायमूर्ति संगीता ढींगरा सहगल की पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता की सजा रद नहीं की जा सकती, क्योंकि उसके खिलाफ अन्य मामलों में मुकदमा चल रहा है और उन पर सुनवाई जारी है। इसके बाद सेंगर के अधिवक्ता ने सजा रद करने के संबंधी याचिका वापस ले ली। पीठ ने सेंगर को जुर्माने की 25 लाख रुपये की धनराशि 60 दिन में जमा कराने की अनुमति दी। इसमें से 10 लाख रुपये बगैर किसी शर्त के पीड़िता को दिए जाएंगे। पीठ ने सीबीआइ व पीड़िता को मामले में अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया।

चुनौती याचिका पर सुनवाई करते हुए पीठ ने कहा कि पीड़िता के साथ कई हादसे हुए हैं, ऐसे में दोषी पर निर्दोष होने की संभावना की दलील पर लागू नहीं होती। लिहाजा अदालत सजा रद नहीं करेगी। सेंगर के अधिवक्ता ने दावा किया कि सेंगर के पास जुर्माने की रकम नहीं है, क्योंकि वह अपने घर में काम करने वाला इकलौता व्यक्ति था।

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आदिवासियों पर दर्ज 215 केस खत्म

नईदुनिया, रायपुर

छत्तीसगढ़ सरकार ने आदिवासियों पर दर्ज 215 आपराधिक मुकदमों को खत्म कर दिया है। सरकार ने यह कार्यवाही न्यायमूर्ति पटनायक समिति की अनुशंसा पर की है। समिति की अगली बैठक में विचार के लिए 197 प्रकरण और रखे जाएंगे।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों विशेषकर बस्तर अंचल के अनुसूचित जनजाति वर्ग के उत्पीड़न पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए इनके विरुद्ध पुलिस में दर्ज प्रकरणों की समीक्षा करने का निर्णय लिया गया था। इस निर्णय के तहत बस्तर संभाग के सातों जिलों के अंतर्गत 215 प्रकरणों की वापसी हुई है।

पुलिस मुख्यालय के अधिकारियों ने बताया कि आठ मार्च 2019 को उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति एके पटनायक की अध्यक्षता में सात सदस्यीय समीक्षा समिति का गठन किया गया था। समिति की पहली बैठक में आदिवासियों के विरुद्ध दर्ज 313 प्रकरणों की वापसी की अनुशंसा की गई। इनमें से बस्तर संभाग में घटित 215 प्रकरणों की वापसी हो चुकी है। राजनांदगांव के 98 प्रकरण न्यायालय में है। पटनायक कमेटी की दूसरी बैठक के लिए 197 प्रकरणों की अनुशंसा की गई है, जिन पर अगली बैठक में निर्णय लिया जाएगा।

अधिकारियों ने बताया कि पुलिस महानिरीक्षक बस्तर और दुर्ग को निर्देशित किया गया है कि वे आदिवासियों के विरुद्ध यदि कोई प्रकरण हो तो उनकी सूची अनुशंसा सहित पुलिस मुख्यालय को भेजें।

गढ़चिरौली में पुलिस ने तीन हजार लोगों को बांटे जाति प्रमाण पत्र

गढ़चिरौली (महाराष्ट्र), एएनआइ : जिला पुलिस ने पिछले एक साल के दौरान नक्सल प्रभावित इलाके में आदिवासियों के बीच 3000 जाति प्रमाण पत्र वितरित किए हैं। यह काम 'प्रोजेक्ट प्रगति' के तहत किया गया है।

गढ़चिरौली के एसपी शैलेश बाल्कावाडे ने कहा, 'हमने प्रोजेक्ट प्रगति के तहत आदिवासियों की पहचान के लिए नई पहल शुरू की है। इसके तहत पहचान के लिए जरूरी जाति प्रमाण पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस और अन्य प्रमाणपत्र जारी किए जाते हैं। इससे आदिवासियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने में मदद मिलेगी। हमने पिछले एक साल के दौरान आदिवासियों को 3000 जाति प्रमाण पत्र बांटे हैं।'

एसडीपीओ विक्रांत गायकवाड़ ने कहा कि नक्सल प्रभावित गांवों में हमने जाति प्रमाण पत्र के माध्यम से आदिवासियों की पहचान के लिए प्रोजेक्ट प्रगति स्कीम शुरू की। नक्सलियों के कारण ग्रामीण तहसील कार्यालय नहीं जा पा रहे थे, इसलिए हमने गांव पहुंचने का और गांव-गांव जाकर प्रमाण पत्र बांटने का फैसला किया। इस पहल के कारण आदिवासियों को काफी लाभ हुआ। आदिवासियों ने भी इस बात पर संतुष्टि जताई है कि सरकार उनकी जरूरतों का समाधान करने के लिए उनके दरवाजों तक पहुंच रही है।

बेहमई नरसंहार के आरोपितों को सजा-ए-मौत की मांग

आज आ सकता फैसला

- वादी के अधिवक्ता ने कोर्ट में सुप्रीम कोर्ट की रूलिंग

जागरण संवाददाता, कानपुर देहात

कानपुर देहात के बेहमई गांव में 39 साल पूर्व हुए नरसंहार का फैसला शनिवार को आ सकता है। शुक्रवार को वादी के अधिवक्ता ने न्यायालय में सुप्रीम कोर्ट की रूलिंग दाखिल कर आरोपितों को मृत्युदंड देने की मांग की। स्टेट ऑफ गुजरात बनाम कृष्णा भाई मामले का हवाला भी दिया है। वादी राजाराम के अधिवक्ता विनीत सिंह बताते हैं कि बेहमई मामला दुर्लभ से दुर्लभतम है। पीड़ित जंटर सिंह और वकील सिंह दो गवाह अभी भी मौजूद हैं। घटना के तत्काल बाद एफआइआर दर्ज होना भी केस का सकारात्मक बिंदु हैं।

उन्होंने बताया कि विशेष न्यायाधीश दस्यु प्रभावित कोर्ट में सुप्रीम कोर्ट की रूलिंग दाखिल की है। जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह चौहान बताते हैं कि धारा 396 (डकैती और हत्या) में मृत्युदंड के साथ ही आजीवन कारावास व जुर्माने का प्रावधान है, लेकिन यह केस की गंभीरता व तत्कालीन परिस्थिति पर निर्भर करता है। वहीं, कम से कम 10 साल सजा व जुर्माने का प्रावधान है। बता दें न्यायालय की ओर से 6 जनवरी फैसले की तिथि घोषित की गई थी, लेकिन बचाव पक्ष के अधिवक्ता गिरीश नारायण द्विवेदी की ओर से नजीरें पेश करने के लिए समय मांगने पर फैसले की तिथि 18 जनवरी की गई थी।

इस केस का दिया हवाला : स्टेट ऑफ गुजरात बनाम कृष्णा भाई 2014 के मामले में डकैती, दुष्कर्म और हत्या में गुजरात हाईकोर्ट से मृत्युदंड की सजा सुनाई गई थी। बचाव पक्ष से सुप्रीम कोर्ट में जेल में बिताई अवधि का हवाला देकर सजा कम करने की मांग की गई थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को यथावत रखा था।

यह था मामला : 14 फरवरी 1981 को बेहमई गांव में दस्यु सुंदरी फूलन देवी, राम औतार, मुस्तकीम और लल्लू गैंग के 35-36 डकैतों ने लूटपाट के साथ 26 पुरुषों को खड़ाकर अधाधुंध फायरिंग की थी जिसमें 20 लोगों की मौत हो गई थी।

चचा कैसे हो...इतना पूछते ही सकपका गया अंसारी

मिड डे, मुंबई : डॉ. जलीस अंसारी की गिफ्तारी के लिए उप्र एसटीएफ स्थानीय मुखबिरों की मदद से उसकी हर गतिविधि पर नजर रख रही थी। इसी क्रम में शुक्रवार को पता चला कि वह कानपुर के रेलबाजार इलाके में स्थित फेथफुलगंज में एक मस्जिद में नमाज पढ़ने गया है। सिविल ड्रेस में एसटीएफ के अधिकारी मस्जिद के आस पास ही थे और उसके बाहर निकलने का इंतजार कर रहे थे। जब वह बाहर निकला तो उसके साथ एक नाबालिग बच्चा उसका हाथ पकड़े चल रहा था।

एसटीएफ के अधिकारी ने उसे पहचान तो लिया, लेकिन उसके साथ एक नाबालिग को देखकर चौंक गया। ऐसा लगा कि वह कोई स्थानीय निवासी है। इसके बाद उस अधिकारी ने अपना शक दूर करने के लिए जलीस को आवाज दी और कहा, ...अंसारी चचा कैसे हो, जेल में हम साथ थे...पहचाने कि नहीं...इतना कहते ही अंसारी सकपका गया। लखनऊ में उप्र पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक इस दौरान उसकी फोटो खींचकर मुंबई एटीएस के अधिकारी को वाट्सएप पर भेजी गई। फोटो की तस्दीक होते ही एसटीएफ ने डॉ.जलीस को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद उसे गिरफ्तार कर लखनऊ ले जाया गया। वहां पर उससे पूछताछ की जाएगी और पता लगाया जाएगा कि वह उप्र में क्या करने आया था। उप्र के पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह ने बताया कि सबसे पहले उप्र एसटीएफ के डीएसपी परमेश कुमार शुक्ला को अंसारी के कानपुर में होने की जानकारी मिली। इसके बाद वहां टीम तैनात की गई।

कार्रवाई को लेकर दावा : जब उप्र एसटीएफ ने पूरी कार्रवाई की जानकारी मीडिया को दी तो महाराष्ट्र एटीएस (आतंक रोधी दस्ता) प्रमुख देवन भारती ने कहा कि अंसारी की गिरफ्तारी उनकी टीम ने की है और इसमें उप्र एसटीएफ ने मदद की है। लेकिन उप्र पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह ने महाराष्ट्र एटीएस के दावे को खारिज कर दिया है। कहा, यह पूरी तरह उप्र एसटीएफ की कार्रवाई है। इतना जरूर है कि जलीस के कानपुर में होने की सूचना मुंबई पुलिस से ही मिली थी।

बदले में किए थे धमाके : डॉ.जलीस ने 5 दिसंबर 1993 को अपने साथी अलवी, इमरान और हसन के साथ मिलकर बाबरी मस्जिद विध्वंस का बदला लेने की साजिश के तहत हावड़ा और दिल्ली जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस ट्रेनों में बम रखे थे। 5 दिसंबर 1993 की सुबह कोटा (राजस्थान) और कानपुर में ट्रेनों में धमाके हुए थे। पुलिस के अनुसार डॉ.जलीस हैदराबाद, मालेगांव (मुंबई) पुणे, अजमेर व अन्य स्थानों पर हुए धमाकों में भी शामिल था। आइजी एसटीएफ अमिताभ यश के अनुसार जलीस को डॉ. बम के नाम से भी जाना जाता है। वह सिमी, हूजी, आइएम के साथ जुड़ा रहा।

देर रात ही बिछा दिया था जाल

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

आइजी एसटीएफ ने मुख्यालय की सभी टीमों को सक्रिय करने के साथ ही संतकबीरनगर, कानपुर व लखनऊ नगर पुलिस के अधिकारियों और जीआरपी के थानों से समन्वय कर डॉ.जलीस की तलाश शुरू कराई। नेपाल भागने की आशंका को देखते हुए सीमा से सटे जिलों की पुलिस व एसएसबी से भी संपर्क साधा गया। इस बीच एसटीएफ के सीओ प्रमेश शुक्ला को उसके कानपुर नगर में होने की सटीक सूचना मिली।

एमबीबीएस कर बना डॉक्टर, बनाने लगा बम : पुलिस के अनुसार संतकबीरनगर निवासी जलीस के पिता स्क्रैप (कबाड़) का काम करते थे। जलीस के पांच और भाई हैं। पिता ने जलीस को एमबीबीएस कराया। 1988 में हैदराबाद के एक दोस्त आजम गौरी ने उसकी मुलाकात आतंकी अब्दुल करीम टुंडा से कराई। जलीस पाकिस्तान चला गया था और हूजी (हरकत उल जिहाद अल इस्लामी) के आतंकियों से बम बनाना सीखा। ट्राई नाइट्रो टालूईन (टीएनटी) और टाइम बम बनाने में माहिर जलीस 1992 में बंग्लादेश के रास्ते भारत आया और धमाके कराए। वह इंडियन मुजाहिदीन से भी जुड़ा रहा। 2008 के मुंबई ब्लास्ट मामले में एनआइए ने अंसारी से पूछताछ की थी।

कानपुर और संत कबीरनगर में रहते हैं दोस्त : सूत्रों के अनुसार कानपुर में जलीस के दो दोस्त रहते थे। इनसे वह मुंबई में मिला था। एक दोस्त रहमान की मौत हो चुकी है, जबकि दूसरे दोस्त कय्यूम का पता नहीं चला। बताया गया कि वह कहीं बाहर रहता है। इसके बाद जलीस संत कबीरनगर में अपने एक दोस्त के यहां जाने वाला था। उसे तीनों से आर्थिक मदद की आस थी, लेकिन मुलाकात नहीं हुई।

जेईई मेन में नौ छात्रों के परफेक्ट 100

नई दिल्ली, प्रेट्र : शुक्रवार रात घोषित संयुक्त प्रवेश परीक्षा-मुख्य (जेईई-मेन) परिणाम में नौ छात्रों ने 100 पर्सेंटाइल (परफेक्ट 100) हासिल किए हैं। यह परीक्षा इसी महीने आयोजित की गई थी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने बताया कि 100 पर्सेंटाइल हासिल करने वाले छात्रों में एक दिल्ली का निशांत अग्रवाल है। जबकि आठ अन्य में गुजरात और हरियाणा का एक-एक और आंध्र प्रदेश, राजस्थान व तेलंगाना के दो-दो छात्र हैं।

क्या है पर्सेंटाइल : पर्सेंटाइल का मतलब होता है कि आपको कितने छात्रों से ज्यादा नंबर मिले है। जैसे अगर आपका पर्सेंटाइल 60 फीसद है तो इसका मतलब हुआ कि आपने 60 फीसद उम्मीदवारों से ज्यादा मार्क्स हासिल किए हैं।

यूं निकाला जाता है पर्सेंटाइल : 100×किसी ग्रुप में सर्वाधिक अंक लाने वाले कैंडिडेट्स से कम अंक लाने वाले छात्रों की कुल संख्या/ग्रुप के कुल कैंडिडेट्स की संख्या। जैसे किसी परीक्षा में छात्रों को 70 फीसद मार्क्स मिले और इससे कम मार्क्स लाने वाले छात्रों की कुल संख्या 15000 है जबकि ग्रुप में कुल छात्रों की संख्या 18000 थी तो पर्सेंटाइल यूं निकाला जाएगा। 100×15000/18000=83.33 फीसद।

जागरण विशेष

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी में सूख रही 43 हेक्टेयर चौड़ी झील को ग्रामीणों ने दिया नया जीवन, बनी मेहमान परिंदों की आरामगाह

श्रमदान से संवर उठी सूखी पड़ी रहने वाली सराही झील

जगदीप शुक्ल, बाराबंकी

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी से आ रही यह खबर सुखद और सराहनीय है। सूखने की कगार पर पहुंच चुकी 43 हेक्टेयर चौड़ी सराही झील ग्रामीणों के श्रमदान से जी उठी है। सराहना के स्वर परिंदों का कलरव बन गूंज रहे हैं।

कपासी हंस, भूरे रंग की टिटहरी, घोंघिल, जघिल, सारस, सैंडपाइपर, सेल्ही, लाल एनजन, कपासी चील, मुस्लिहिया आदि पक्षियों ने यहां डेरा डाला है। जिले के सराही गांव के समाजिक कार्यकर्ता सुशील सिंह वर्षों बाद इस तरह मेहरबान हुए मेहमान परिंदों को देखकर गदगद हैं। वह बताते हैं कि झील सूखने के चलते प्रवासी पक्षियों ने गांव से मुंह मोड़ लिया था। अब झील में भरपूर पानी है।

झील के कायाकल्प से न सिर्फ गांव की प्राकृतिक आभा लौटी है बल्कि इससे आसपास के गांवों का भूजल स्तर भी सुधरेगा। गांव को मिली इस प्राकृतिक नेमत के मिटने का मलाल लोगों के मन में था, लेकिन वे चाहकर भी कुछ कर नहीं पा रहे थे। बीते वर्ष पर्यावरण प्रेमी एसडीएम राजीव शुक्ल ने सूखने की कगार पर पहुंची झील को देखकर इसके संवर्द्धन का प्रयास शुरू किया, लेकिन बजट आड़े आया। इस पर उन्होंने आसपास के गांवों के प्रबुद्ध लोगों से संपर्क कर झील को बचाने के लिए आगे आने को कहा। सुशील सिंह, अजीत सिंह, दिलीप सिंह, रंगीलाल, रामलखन, रामनरेश, सचिन आदि लोगों समझाने में जुट गए। लोग राजी हुए और सराही गांव की प्रधान सरपता और मीननगर के प्रधान ज्ञान मिश्र के नेतृत्व में सबने बरसात से पहले ही झील के चारों ओर एक मीटर ऊंचा तटबंध बना डाला। बारिश में चार सौ मीटर तटबंध कट गया तो लोगों ने कड़ी मशक्कत करके उसकी मरम्मत भी की।

जीवनदान

- बरसात से पहले झील के चारों ओर बनाया था एक मीटर ऊंचा तटबंध
- लौट आया पानी, मेहरबान हुए मेहमान परिंदे, कलरव से गूंज रही झील

ग्रामीणों ने श्रमदान करके सराही झील को नया जीवन दिया है। इसके चलते यह प्रवासी पक्षियों से गुलजार हो गई है। यहां सारस बहुतायत में हैं। इसलिए इसे सारस पक्षी संरक्षण केंद्र बनाने का प्रस्ताव भेजा गया है। झील के चारों तरफ वृहद पौधारोपण भी कराने की भी योजना है।

-राजीव कुमार शुक्ल, एसडीएम रामसनेहीघाट

रामसनेहीघाट क्षेत्र की सराही झील में लौट आए पक्षी। जागरण

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/jagran-special

एटीएम जालसाजी में गया गैंग के दो आरोपित गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, कोलकाता

एटीएम जालसाजी में बिहार के गया गैंग के दो लोगों को गिरफ्तार करने में बंगाल पुलिस को सफलता मिली है। आरोपित सियालदह स्टेशन से दार्जिलिंग मेल पकड़कर कहीं भागने की फिराक में थे। पुलिस ने उनसे क्लोन किए गए 38 डेबिट कार्ड, स्कीमर मशीन तथा डिवाइस, लैपटॉप आदि बरामद किए हैं। आरोपित क्लोन डेबिट कार्ड के जरिये ही लोगों के बैंक खाते से रकम को उड़ा लेते थे।

सूत्रों के अनुसार एटीएम जालसाजी में अभी तक रोमानियाई गैंग ही पुलिस की नजरों में था, लेकिन अब एटीएम जालसाजी में बिहार गैंग की जानकारी भी सामने आई है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने बीते गुरुवार रात सियालदह स्टेशन में छापेमारी कर गिरोह के दो लोगों को गिरफ्तार किया है। तलाशी में उनके पास से 38 क्लोन डेबिट कार्ड, स्कीमर मशीन, डिवाइस, लैपटॉप समेत अन्य दस्तावेज बरामद किए हैं। पूछताछ में आरोपितों ने अपने नाम मुदस्सर खान तथा इरफानउद्दीन निवासी गया, बिहार बताया है। पुलिस के अनुसार आरोपित कहीं फरार होने के इरादे से दार्जिलिंग मेल पकड़ने के लिए सियालदह स्टेशन पहुंचे थे। गिरोह के लोग पहले विभिन्न बैंकों के एटीएम में स्कीमर लगा देते थे। इसके बाद बाहर खड़े होकर ग्राहक के आने का इंतजार करते थे। उनके निशाने में बुजुर्ग या अनपढ़ ग्राहक ही होते थे। जब ग्राहक एटीएम में दाखिल होता था तब मदद के नाम पर पलक झपकते ही स्कीमर के माध्यम से उसके एटीएम कार्ड के तथ्यों को एकत्र कर लेते थे। इसके बाद उक्त तथ्यों के आधार पर एटीएम कार्ड का क्लोन तैयार कर ग्राहकों के खातों से रुपये उड़ा लेते थे। आरोपित बीते कई माह से जादवपुर एवं तिलजला में किराये के मकान में रह रहे थे।